



भारतीय अर्थव्यवस्था पर होर्मुज संकट के प्रभाव का विश्लेषण

डॉ. संजय कुमार^{1*} और डॉ. अमित अग्रवाल²

¹ सहायक प्रोफेसर, वाणिज्य संकाय, धर्मानंद उनियाल गवर्नमेंट पीजी कॉलेज, नरेंद्र नगर, उत्तराखंड, भारत

² सहायक प्रोफेसर, वाणिज्य संकाय, गवर्नमेंट कॉलेज, मिलक-शाहाबाद, रामपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence Author: डॉ. संजय कुमार

Received 1 Apr 2026; Accepted 12 May 2026; Published 29 May 2026

DOI: <https://doi.org/10.64171/JSRD.5.S3.46-50>

सारांश

होर्मुज जलडमरूमध्य एक बहुत ही महत्वपूर्ण जलमार्ग है जो दुनिया के अधिकांश तेल और प्राकृतिक गैस के परिवहन में मदद करता है। भारत अपनी ऊर्जा का 85% से अधिक अन्य देशों, विशेष रूप से मध्य पूर्व से प्राप्त करता है। यह पेपर विश्लेषण करता है कि होर्मुज जलडमरूमध्य में संघर्ष या व्यवधान जैसी समस्याएं भारत की अर्थव्यवस्था को कैसे प्रभावित कर सकती हैं। इस अध्ययन में 200 लोगों से सवाल पूछे गए और अन्य आंकड़ों का विश्लेषण करके जवाब प्राप्त किए गए। इससे पता चलता है कि तेल की कीमतें बढ़ने पर चीजें महंगी हो जाती हैं, जिसका असर भारत की मुद्रा और व्यापार पर पड़ता है। अध्ययन में सुझाव दिया गया है कि भारत को ऊर्जा प्राप्त करने के लिए अलग-अलग तरीके खोजने चाहिए और सुरक्षा के लिए अधिक भंडार जमा करना चाहिए।

मुख्य शब्द: होर्मुज संकट, तेल और प्राकृतिक गैस, भारतीय मुद्रा, अर्थव्यवस्था, ऊर्जा

परिचय

होर्मुज जलडमरूमध्य ईरान और ओमान के बीच एक बहुत ही महत्वपूर्ण जलमार्ग है, जो दुनिया भर से तेल और प्राकृतिक गैस का परिवहन करता है। सऊदी अरब, इराक, कुवैत, संयुक्त अरब अमीरात और कतर जैसे देश इस जलडमरूमध्य के माध्यम से तेल भेजते हैं। इस कारण से, इसे "चोकपॉइंट" कहा जाता है - यानी एक संकीर्ण क्षेत्र, जहां संघर्ष या समस्या होने पर बड़ी समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। यदि क्षेत्र में झगड़े, प्रतिबंध या हमले होते हैं, तो कम तेल का परिवहन किया जाता है, जिससे तेल की कीमतें तेज हो जाती हैं। भारत, जो अपनी अधिकांश ऊर्जा मध्य पूर्व के देशों से प्राप्त करता है, इन समस्याओं को बुरी तरह से झेलता है। तेल की कीमतें बढ़ने पर पेट्रोल, डीजल, एलपीजी और जेट फ्यूल की कीमत भी बढ़ जाती है। इससे परिवहन और सामान महंगा हो जाता है, जिससे रोजमर्रा की वस्तुओं की कीमतें बढ़ जाती हैं। इससे कम आय वाले लोगों को सबसे ज्यादा नुकसान होता है, जिनके लिए उनकी जरूरत की चीजें खरीदना मुश्किल हो जाता है। चूंकि भारत को बाहर से बहुत अधिक तेल खरीदना पड़ता है, इसलिए उच्च कीमतों का मतलब यह भी है कि भारत को आयात पर अधिक खर्च करना पड़ता है। इससे अमेरिकी डॉलर के मुकाबले भारतीय मुद्रा रुपये कमजोर हो सकती है। जब रुपया कमजोर होता है, तो आयातित सामान और भी महंगा हो जाता है, जिससे आर्थिक समस्याएं और बढ़ जाती हैं। उर्वरक, सीमेंट, इस्पात और विमान निर्माण जैसे उद्योगों को भी लागत वृद्धि का सामना करना पड़ता है, जो व्यापार और विकास की गति को धीमा कर सकता है। कुल मिलाकर, होर्मुज जलडमरूमध्य में समस्याएं भारत की अर्थव्यवस्था को कई तरह से प्रभावित कर सकती हैं, जिससे देश का विकास करना और स्थिर रहना मुश्किल हो जाता है।

अनुसंधान के उद्देश्य

इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य हैं:

- होर्मुज संकट की प्रकृति और महत्व का अध्ययन करना।
- भारतीय अर्थव्यवस्था पर इसके संभावित प्रभाव का विश्लेषण करना।
- 200 उत्तरदाताओं के सर्वेक्षण के माध्यम से जनता की राय और इसके प्रभाव का अध्ययन करना।
- सार्वजनिक नीति की भूमिका का आकलन करना।
- समाधान और सिफारिशें प्रस्तुत करना।

अनुसंधान तकनीक

इस अध्ययन में भारत की अर्थव्यवस्था पर होर्मुज संकट के प्रभाव को समझने के लिए दो तरीके अपनाए गए। सबसे पहले, इसने छात्रों, व्यापारियों, श्रमिकों, कारखाने के मालिकों और आर्थिक विशेषज्ञों सहित 200 अलग-अलग लोगों को अपने विचारों और अनुभवों को साझा किया। दूसरा, इसने भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई), भारतीय अर्थव्यवस्था एजेंसी (आईईए), विश्व बैंक और बीपी जैसी संस्थाओं से विश्वसनीय रिपोर्टों का अध्ययन करके तथ्यों और आंकड़ों को इकट्ठा किया। अध्ययन में यह समझने के लिए विभिन्न गणितीय उपकरणों का उपयोग किया गया कि तेल की कीमतें, सामान्य वस्तुओं की कीमतें, भारत आयात पर कितना पैसा खर्च करता है और अर्थव्यवस्था आपस में जुड़ी हुई है। लोगों से सवाल पूछने और रिपोर्ट का अध्ययन करने से अध्ययन को अधिक सटीक और गहन बनाने में मदद मिली।

सरकारी नीतियां

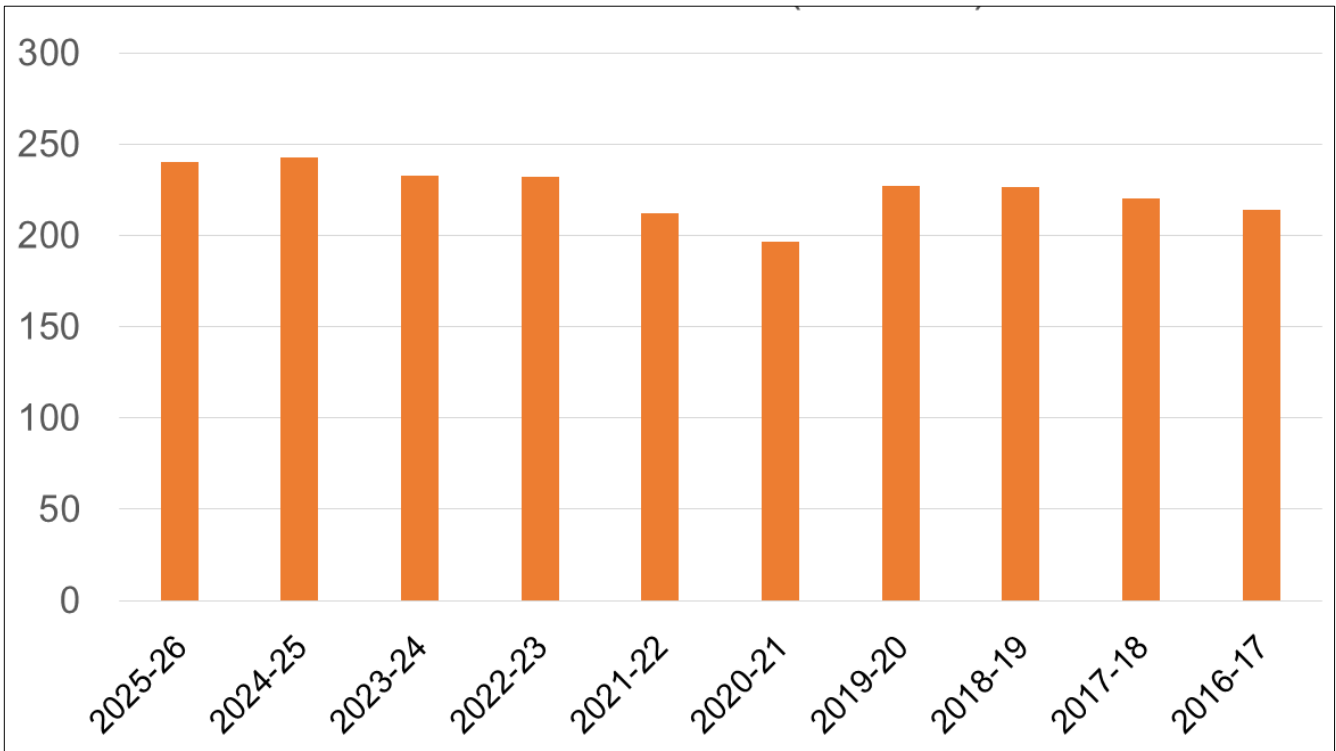
इस अध्ययन में भारत की अर्थव्यवस्था पर होर्मुज संकट के प्रभाव को समझने के लिए दो तरीके अपनाए गए। सबसे पहले, इसने छात्रों,

व्यापारियों, श्रमिकों, कारखाने के मालिकों और आर्थिक विशेषज्ञों सहित 200 अलग-अलग लोगों को अपने विचारों और अनुभवों को साझा किया। दूसरा, इसने भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई), भारतीय अर्थव्यवस्था एजेंसी (आईईए), विश्व बैंक और बीपी जैसी संस्थाओं से विश्वसनीय रिपोर्टों का अध्ययन करके तथ्यों और आंकड़ों को इकट्ठा किया। अध्ययन में यह समझने के लिए विभिन्न गणितीय उपकरणों का उपयोग किया गया कि तेल की कीमतें, सामान्य वस्तुओं की कीमतें, भारत आयात पर कितना पैसा खर्च करता है और अर्थव्यवस्था आपस में जुड़ी हुई है। लोगों से सवाल पूछने और रिपोर्ट का अध्ययन करने से अध्ययन को अधिक सटीक और गहन बनाने में मदद मिली।

चर्चा, जांच और परिणाम

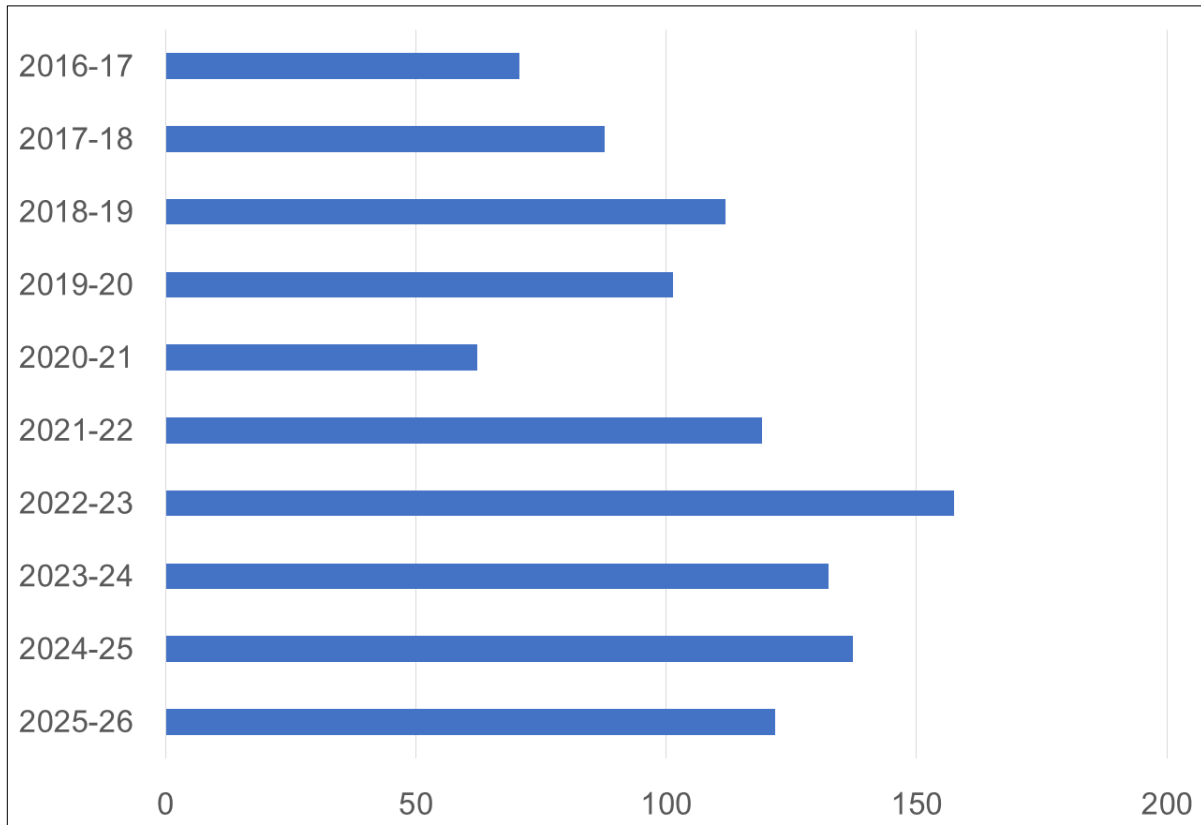
शोध से पता चलता है कि यदि होर्मुज जलडमरूमध्य में कोई अप्रिय घटना होती है, जैसे कि युद्ध या आपूर्ति की समस्याएं, तो यह भारत के लिए ऊर्जा को महंगा बना सकता है। चूंकि भारत अपनी अधिकांश ऊर्जा विदेशों से खरीदता है, इसलिए तेल की ऊंची कीमतें इसकी लागत को लगभग 10 से 25 प्रतिशत तक बढ़ा सकती हैं। जब तेल की कीमतें बढ़ जाती हैं तो लोगों के लिए चीजें महंगी हो जाती हैं क्योंकि

माल के परिवहन और उत्पादन की लागत बढ़ जाती है, जिससे सब कुछ महंगा हो जाता है। कम आय वाले परिवार सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। इसके अलावा, उच्च ऊर्जा की कीमतें कारखानों को चलाना महंगा बनाती हैं, जो भारत की अर्थव्यवस्था के विकास को धीमा कर सकती हैं। अध्ययन में कहा गया है कि चूंकि भारत ऊर्जा आयात पर अधिक खर्च करता है, इसलिए इसकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है और भारतीय रुपये का मूल्य गिर सकता है, जिससे आयातित सामान महंगा हो सकता है। चूंकि भारत ऊर्जा के लिए विदेशों पर बहुत अधिक निर्भर है, इसलिए होर्मुज जलडमरूमध्य में समस्याएं न केवल ऊर्जा बल्कि व्यापार, रोजगार, कीमतों और मुद्रा स्थिरता को भी प्रभावित कर सकती हैं। भारत में बहुत से लोग ऊर्जा सुरक्षा के बारे में जानते हैं और दीर्घकालिक समाधान के रूप में सौर, पवन और इलेक्ट्रिक वाहनों जैसी नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग का समर्थन करते हैं। फिर भी, अध्ययन में कहा गया है कि भारत को पर्याप्त ऊर्जा विकल्प सुनिश्चित करने, ऊर्जा को सुरक्षित रूप से संग्रहीत करने और आपात स्थिति से बेहतर तरीके से निपटने के लिए बेहतर योजनाओं की आवश्यकता है।



स्रोत: स्रोत: भारत सरकार के पेट्रोलियम प्लानिंग एंड एनालिसिस सेल (पीपीएसी) के आधिकारिक आंकड़े

चित्र 1: आयातित तेल की मात्रा (मिलियन टन)



स्रोत: पेट्रोलियम प्लानिंग एंड एनालिसिस सेल (पीपीएसी), भारत सरकार के आधिकारिक आंकड़े

चित्र 2: कुल आयात बिल (अरब अमेरिकी डॉलर)

आंकड़े 1 और 2 से पता चलता है कि कच्चे तेल के आयात पर भारत का खर्च वैश्विक घटनाओं, तेल की कीमतों और लोगों की मांग या तेल की मांग करने की अनिच्छा के कारण काफी भिन्न होता है। 2016-17 में, भारत ने केवल 70.7 बिलियन डॉलर खर्च किए क्योंकि दुनिया भर में तेल की कीमतों में काफी गिरावट आई थी। बाद के वर्षों में, तेल की कीमतें धीरे-धीरे बढ़ीं, इसलिए भारत ने तेल पर अधिक खर्च किया। 2018-19 में, कुछ देशों ने तेल उत्पादन कम कर दिया, कीमतों को फिर से बढ़ा दिया और भारत का बिल 111.9 बिलियन डॉलर तक पहुंच गया। 2020-21 में, कोविड-19 और लॉकडाउन के कारण, कम लोगों ने तेल का उपयोग किया, इसलिए कीमतें गिर गईं और भारत ने केवल 62.2 बिलियन डॉलर खर्च किए – उस अवधि में सबसे कम राशि। लेकिन 2022-23 में, जब रूस और यूक्रेन में

समस्याएं पैदा हुईं, तो तेल की कीमतें 100 डॉलर प्रति बैरल से ऊपर बढ़ गईं, और भारत ने भारी खर्च किया - 157.5 बिलियन डॉलर। 2023-24 में, भारत ने रूस से कम कीमतों पर अधिक तेल खरीदा, इसलिए लागत थोड़ी कम हो गई। 2025-26 के लिए, पश्चिम एशिया में संघर्ष और समस्याओं के बावजूद, भारत का तेल खर्च \$121.8 बिलियन तक गिर गया, जो पिछले वर्ष से लगभग 5% कम है। इससे पता चलता है कि भारत सस्ते दामों पर तेल खरीदने के अन्य तरीकों की तलाश कर रहा है। कुल मिलाकर, चार्ट से पता चलता है कि भारत की अर्थव्यवस्था काफी हद तक विश्व तेल बाजार पर निर्भर है, और अन्य देशों की समस्याएं भारत के व्यापार, कीमतों और अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर सकती हैं।

तालिका 1: भारतीय बास्केट के कच्चे तेल की मासिक औसत दरें (USD प्रति बैरल) (जनवरी 2026 – मई 2026)

महीना	औसत कीमत	बाजार की स्थिति और प्रभाव
जनवरी 2026	\$59.92	चार साल तक तेल की कीमतें बहुत कम थीं क्योंकि बहुत कम लोग इसे खरीदना चाहते थे।
फरवरी 2026	\$65.82	महीने के मध्य में, मध्य पूर्व में चल रही समस्याओं के कारण कीमतें बढ़ने लगीं।
मार्च 2026	\$137.00 - \$146.09	अमेरिका, इजरायल और ईरान के बीच चल रहे युद्ध के कारण कीमतों में भारी वृद्धि हुई।
अप्रैल 2026	\$114.48	तेल की कमी और राजनीतिक समस्याओं के कारण कीमतें ऊंची रहीं।
मई 2026 (11 मई तक)	\$104.68	फिर, कीमतों में थोड़ी कमी आई और 8 मई को एक बैरल तेल की कीमत लगभग 102.52 डॉलर थी।

स्रोत: पेट्रोलियम प्लानिंग एंड एनालिसिस सेल (पीपीएसी), भारत सरकार के आधिकारिक आंकड़े

तालिका - 01 से पता चलता है कि भारत में कच्चे तेल की कीमतों में 2026 के पहले पांच महीनों में काफी उतार-चढ़ाव आया है। जनवरी में कीमत 59.92 डॉलर प्रति बैरल थी, जो पिछले चार वर्षों में सबसे कम

थी, क्योंकि तेल की मांग कम थी और आपूर्ति पर्याप्त थी। फरवरी में, मध्य पूर्व में समस्याओं की शुरुआत के कारण कीमत बढ़कर लगभग \$65.82 हो गई। मार्च में, अमेरिका, इजरायल और ईरान के बीच युद्ध

ने तेल बाजार में भारी उथल-पुथल मचा दी, जिससे कीमतें 137 डॉलर और 146.09 डॉलर प्रति बैरल के बीच बढ़ गईं। यह स्थिति भारत जैसे देशों के लिए बेहद मुश्किल थी, जिन्होंने कीमतों में वृद्धि के रूप में भारी मात्रा में तेल खरीदा। अप्रैल में, कीमतें थोड़ी कम होकर \$114.48 हो गईं, लेकिन अभी भी अधिक थीं, जिससे आपूर्ति अनिश्चितता का पता चलता है। मई में, कीमतें फिर से गिरकर \$104.68 हो गईं, लेकिन फिर भी अधिक रहीं। भारत ने आयातित तेल के प्रकारों को भी बदल दिया, लागत कम रखने और ऊर्जा सुरक्षा बनाए रखने के लिए मीठे और खट्टे कच्चे तेल को अलग-अलग मात्रा में मिलाया। कुल मिलाकर, तालिका से पता चलता है कि जब दुनिया भर में युद्ध या युद्ध होते हैं, तो इसका प्रभाव इस बात पर पड़ता है कि भारत को तेल के लिए कितना भुगतान करना पड़ता है और कीमतें कितनी बढ़ जाती हैं।

200 लोगों के एक सर्वेक्षण से पता चलता है कि भारत में बहुत से लोग होर्मुज संकट और वैश्विक तेल की कीमतों में वृद्धि को लेकर चिंतित हैं। सर्वेक्षण में छात्रों (40 प्रतिशत), कामकाजी पेशेवरों (25 प्रतिशत), व्यवसाय के मालिक (20 प्रतिशत) और विशेषज्ञों या अन्य (15 प्रतिशत) को अलग-अलग राय प्राप्त करने के लिए शामिल किया गया। अधिकांश लोगों (82%) ने कहा कि पेट्रोल और डीजल की कीमतों में वृद्धि से भोजन और दैनिक उपयोग की वस्तुओं जैसी हर चीज महंगी हो गई है। लगभग 76% लोगों ने कहा कि होर्मुज संकट जैसी घटनाओं से भारत में कीमतें बढ़ सकती हैं। व्यापार मालिकों और कर्मचारियों ने कहा कि मुद्रास्फीति, या बढ़ती कीमतें, उनके लिए बचत करना मुश्किल बनाती हैं। बहुत से लोग (68%) का मानना है कि भारत की अर्थव्यवस्था "उच्च जोखिम" में है क्योंकि देश ऊर्जा आयात पर निर्भर है। केवल 54% का मानना है कि सरकार ऊर्जा संकट से निपटने के लिए तैयार है, जबकि अन्य का मानना है कि ऊर्जा की बचत, वैकल्पिक स्रोतों का उपयोग और कीमतों पर नियंत्रण जैसे और कदम उठाने की आवश्यकता है। अधिकांश लोग (91%) मानते हैं कि सौर, पवन और इलेक्ट्रिक वाहनों जैसी नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग बेहतर भविष्य सुनिश्चित करने का एक अच्छा तरीका है। सर्वेक्षण से पता चलता है कि भारत में लोग समझते हैं कि कीमतों को नियंत्रित करने और अर्थव्यवस्था को स्थिर रखने के लिए दीर्घकालिक, पर्यावरण के अनुकूल ऊर्जा योजनाएं महत्वपूर्ण हैं।

निष्कर्ष

इस अध्ययन से पता चलता है कि होर्मुज जलडमरूमध्य में समस्याएं भारत की अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचा सकती हैं, क्योंकि भारत को अपनी ऊर्जा का एक बड़ा हिस्सा अन्य देशों से मिलता है। अगर उस क्षेत्र में कोई लड़ाई या अशांति होती है, तो तेल की कीमतें बढ़ सकती हैं। तेल की कीमतें बढ़ने से परिवहन और उत्पाद निर्माण जैसी चीजें महंगी हो जाती हैं, जिससे वस्तुओं और सेवाओं की कीमतें बढ़ जाती हैं। इससे लोगों के लिए चीजें खरीदना मुश्किल हो जाता है। दूसरे देशों से तेल खरीदना भी भारत के लिए महंगा पड़ता है, जिससे भारतीय मुद्रा की कीमत कम हो सकती है। इससे देश की अर्थव्यवस्था के लिए समस्याएं पैदा होती हैं। सुरक्षित रहने के लिए भारत को एक दीर्घकालिक योजना की जरूरत है। इसमें सौर और पवन जैसी अधिक नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग करना, तेल प्राप्त करने के नए स्रोत खोजना और आपात स्थिति के लिए तेल की बचत करना शामिल हो सकता है। अध्ययन में कहा गया है कि भारत को अपनी ऊर्जा

योजनाओं को अधिक लचीला और आत्मनिर्भर बनाना चाहिए ताकि वह वैश्विक समस्याओं का सामना कर सके और अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूत रख सके।

युक्तियाँ और प्रभावशाली रणनीतियाँ

अध्ययन के अनुसार, भारत को होर्मुज संकट जैसे जोखिमों से निपटने के लिए एक दीर्घकालिक योजना बनानी चाहिए। इस योजना में जीवाश्म ईंधन के उपयोग को कम करने और स्वच्छ ऊर्जा आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए सौर, पवन और हरित हाइड्रोजन जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों में अधिक निवेश करना शामिल है। भारत को अपने आपातकालीन तेल भंडार को भी बढ़ाना चाहिए ताकि आपूर्ति की समस्याओं और अचानक कीमतों में वृद्धि के दौरान उसके पास पर्याप्त स्टॉक हो। तेल के लिए किसी एक स्रोत पर अत्यधिक निर्भरता से बचने के लिए, भारत को रूस, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका, अमेरिका और मध्य पूर्व जैसे विभिन्न देशों से तेल प्राप्त करने की आवश्यकता है। इलेक्ट्रिक कारों और बेहतर सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देने से कम तेल का उपयोग करने और पर्यावरण के लिए बेहतर होने में मदद मिल सकती है। भारत को विचारों और संसाधनों को साझा करने के लिए अन्य देशों और ऊर्जा समूहों के साथ मिलकर काम करना चाहिए। "तेल मूल्य स्थिरीकरण कोष" नामक एक विशेष कोष की स्थापना तेल की कीमतों में बड़े बदलावों को नियंत्रित करने, परिवारों और व्यवसायों की सुरक्षा करने में सहायक हो सकती है। ऊर्जा उपयोग दक्षता में सुधार, बिजली ग्रिड को अपग्रेड करना, अधिक जैव ईंधन का उपयोग करना और नई तकनीक में निवेश करना भी महत्वपूर्ण है। ये सभी कदम भारत को अधिक ऊर्जा आत्मनिर्भर बनाने और होर्मुज जलडमरूमध्य जैसी वैश्विक समस्याओं के प्रभावों को कम करने में मदद कर सकते हैं।

संदर्भ सूची

1. BP. Statistical Review of World Energy. British Petroleum, 2023. <https://www.bp.com/en/global/corporate/energy-economics/statistical-review-of-world-energy.html>
2. International Energy Agency. (2023). World Energy Outlook. IEA Publications, 2023. <https://www.iea.org/reports/world-energy-outlook-2023>
3. Reserve Bank of India. Annual Report on Currency and Finance. RBI, 2024. <https://www.rbi.org.in>
4. World Bank. Global Economic Prospects. Washington, DC, 2023. <https://www.worldbank.org/en/publication/global-economic-prospects>
5. Kumar R, Sharma P. Geopolitical risks and macroeconomic stability in emerging economies. Journal of Economic Studies. 2022;49(3):455–472. <https://doi.org/10.1108/JES-2022-XXXX>
6. Ministry of Petroleum and Natural Gas, Government of India. Energy Statistics India, 2023. <https://mopng.gov.in/en>
7. Petroleum Planning & Analysis Cell (PPAC). Monthly crude oil import statistics & price data. Government of India, 2025. <https://www.ppac.gov.in>

8. Petroleum Planning & Analysis Cell (PPAC). *Indian basket crude oil price data (monthly reports)*. Government of India, 2026. <https://www.ppac.gov.in>
9. Organisation of the Petroleum Exporting Countries (OPEC). Annual statistical bulletin, 2024. https://www.opec.org/opec_web/en/publications/202.htm
10. U.S. Energy Information Administration (EIA). International energy outlook, 2024. <https://www.eia.gov/outlooks/ieo/>
11. NITI Aayog. India energy security scenarios 2047. Government of India, 2023. <https://www.niti.gov.in>
12. Ministry of Commerce & Industry, Government of India. Trade statistics and balance of payments data, 2024. <https://commerce.gov.in>